during 64-65 or 65-66 due to lack of funds and was programmed to be taken up during 67-68. It is also a fact that a letter stating that some of the employees were proposing to go on hunger strike if the work was not taken up immediately was received by the Railway Administration. After review of the whole issue it has now been decided by the Railway Administration to take up the work in 1966-67 itself and the work is expected to commence early.

Cattle Feed Factories

5655. **Shri Firodia:** Will the Minister of **Industry** be pleased to state:

(a) the total number of cattle feed factories in the country at present;

(b) the total capacity; and

(c) the incentives or help offered by Government for establishing these factories?

The Minister of Industry (Shri D. Sanjivayya): (a). 12.

(b) About 2,50,000 tonnes per annum.

(c) A statement is laid on the Table of the House. [*Placed in Library. See* No. LT-6343/66].

Filling of top posts in Public Undertakings

5656. **Shri Baswant:**
Shri Vishwa Nath Pandey:

Will the Minister of **Industry** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Government are considering any proposal that senior appointments and technical posts in all major public undertakings of the centre should be filled on all-India basis and not on regional considerations; and

(b) if so, when?

The Minister of Industry (Shri D. Sanjivayya): (a) and (b). According to the principles of recruitment laid down, in April, 1961, senior appointments and technical posts in the public undertakings are to be filled by the recruitment of the best qualified and the most experienced persons, on an all-India basis, by advertisement or other suitable methods. The reservations in respect of scheduled castes/tribes are on the same lines as in the case of appointments under Government.

12.20 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

HOLD-UP OF TRAINS AT GHAZIABAD ON 12TH MAY, 1966

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर रेल मन्त्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

"गाजियाबाद में रेल मुसाफिरों द्वारा 12 मई, 1966 को गाड़ियों का रोका जाना।"

रेलवे मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : अध्यक्ष महोदय, कल रोहतक–दिल्ली–गाजियाबाद शटल गाजियाबाद से ठीक समय पर 7–50 बजे सुबह रवाना हुई। उस गाड़ी को एक भीड़ ने गाजियाबाद और साहिबाबाद के बीच में रोक लिया। 83 अप, लखनऊ एक्सप्रेस 9.40 बजे सुबह साहिबाबाद पहुंची। उसको भी वहां पर रोक लिया गया। एस० डी० एम० और पुलिस को वहां बुलाना पड़ा। तब 10–21 बजे सुबह 83 अप वहां से रवाना हो पाई।

श्री बाजी (इन्दौर) : इन गाड़ियों को क्यों रोका गया ?

डा० राम सुभग सिंह : उस पर मैं अभी आता हूं।

उसके बाद आसाम मेल आई और उसको भी रोका गया ।

श्री विश्राम प्रसाद : (लालगंज): और 20 अप, लखनऊ मेल को कितनी देर रोका गया ?

डा० राम सुभग सिंह : 29 अप, लखनऊ मेल 8–20 बजे गाजियाबाद पहुंची और उसको 12–40 बजे तक रोका गया । इसी तरह गाजियाबाद–नई दिल्ली शटल को भी 8–30 बजे से 12–15 बजे तक रोका गया । 2 डाउन, कालिका मेल को 39 मिनट तक, 19 डाउन, दून एक्सप्रैस को 1 घंटा 57 मिनट तक और 2 ए० टी० डी० को 30 मिनट तक रोका गया ।

जिन लोगों ने इन गाड़ियों को रोका, उन्होंने इसका कारण यह बताया कि रोहतक-दिल्ली-गाजियाबाद शटल देर से चलती है । मैंने इस बारे में टेलीफ़ोन से ख़बर ली ।

The plea of the people for detaining the trains was that 1 Rohtak-Delhi-Ghaziabad shuttle was regularly running late, which is actually not correct.

Shri Vishram Prasad: It is correct.

Dr. Ram Subhag Singh: Perhaps the hon. Member has very seldom used this Rohtak-Delhi-Ghaziabad shuttle, and so he might not at all be conversant with the position.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती (अज्जर) : मैं खूब आता हूं ।

Dr. Ram Subhag Singh: In the first 12 days of May, 1966, this train left Ghaziabad right time on all days except for three days, and the late start was 15 minutes, 7 minutes and 5 minutes on those three days; it arrived at Rohtak right time on all but five occasions, and the late arrival was between 5 and 7 minutes. It arrived at Delhi right time on all but five occasions, and the late arrival was as under; on 3rd May, 22 minutes; on 5th May, 27 minutes; on 7th May, 12 minutes: on 10th May, 5 minutes, and on 11th May, 9 minutes. That is the actual position.

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, दिल्ली राजधानी का शहर है । इस शहर में पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से जितनी गाड़ियां आती हैं, पिछले दो महीने में उनमें से कितनी गाड़ियां लेट आई और कितनी गाड़ियां समय पर आई, अगर माननीय मंत्री इसका ब्यौरा रखेंगे, तब पता चल जायेगा कि मुसाफिरों के द्वारा इस तरह का सत्याग्रह क्यों किया जाता है ।

अध्यक्ष महोदय : वह इसमें नहीं आ सकता है ।

श्री मधु लिमये : गाड़ियां लेट होने की वजह से ही मुसाफिर नाराज हो कर यह सारा काम कर रहे हैं । मंत्री महोदय ने कहा है कि वे बिला-वजह ऐसा कर रहे हैं । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हर एक आदमी को काम-धंधा होता है । बिना किसी कारण के क्यों कोई अपना समय बिगाड़ेगा ? जब लोगों को कोई शिकायत होती है, तभी वे सत्याग्रह और इस तरह की दूसरी कार्यवाही करते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : हर एक गाड़ी का ब्यौरा यहां नहीं आ सकता है ।

श्री मधु लिमये : क्यों नहीं आ सकता है ? मंत्री महोदय को इस वक्त जो जानकारी है, वह रख दें और बाद में पूरी जानकारी एकत्रित करके सदन के सामने रखें ।

डा० राम सुभग सिंह : आज ब्यौरा देना असम्भव है ।

अध्यक्ष महोदय : ब्यौरा बाद में रख दीजिये ।

डा० राम मनोहर लोहिया (फ़र्रुखाबाद): जिस गाड़ी से मैं आ रहा था, उसको किसी ने रोका नहीं था, बल्कि रेल की बद-इन्तजामी के कारण वह चार पांच घंटे गाजियाबाद स्टेशन पर रुकी रही और जिस तरह से मेरे काम में हर्ज हुआ, उसी तरह से—मुझे वहां पर लोगों ने बताया कि—करीब तीस हजार मजदूरों, विद्यार्थियों और दफ्तरों में काम करने वाले लोगों का अक्सर—रोज तो मैं नहीं कहूंगा, लेकिन अक्सर—नुकसान हुआ करता है। वहां पर लोगों ने मुझे कुछ कागज भी दिये, जो मैं बाद में मंत्री को दे दूंगा। मुझे यह भी बताया गया कि कुछ रेलगाड़ियां, जिनको बम्बई और कलकत्ता के हिसाब से मुश्किल से पौन घंटा लगना चाहिए, कागज पर भी ढाई, तीन घंटे का वक्त लेती हैं। उनके वक्त में इतनी देर कर दी गई है यह बहुत जबर्दस्त नुकसान हो रहा है। फिर उसके बाद उन मजदूरों, दफ्तर में काम करने वालों और विद्यार्थियों को उनके मालिक, अफसर या मास्टर डांट भी देते हैं। शायद पैसे वगैरह के मामले में भी उनको नुकसान उठाना पड़ता है। इन सब बातों को देखते हुए क्या मंत्री महोदय बम्बई और कलकत्ता की तरह यहां दिल्ली में भी, जहां तीस, पचास हजार लोग आते जाते हैं, सबर्बन ट्रेन्ज, उपनगरीय गाड़ियां चलायेंगे ? रेलगाड़ियों में जो देरी हो रही है, उस सवाल को अब तक उन्होंने समय-सूचिका समय चढ़ा कर हल किया है। क्या मंत्री महोदय उस समय को भी ठीक बनायेंगे, दो तीन घंटे न रख कर कोई वाजिब वक्त, आध घंटा, रखेंगे ?

डा० रा सुभग सिंह: विद्यार्थियों, मजदूरों और दिल्ली के सरकारी विभागों में काम करने वालों, इन सब की सुविधा के लिहाज से टाइम टेबल बनाया गया है। लेकिन अगर कोई मुसाफिर यह महसूस करता है कि यह टाइम टेबल असुविधाजनक है, तो हम उनसे और उनके प्रतिनिधियों से बात करके उसमें सुधार लायेंगे। हम मानते हैं कि उनके समय और उनके धन की बर्बादी हुई लेकिन यह भी देखना चाहिए कि कि रेलों की कितनी बर्बादी हुई और निरीह यात्रियों का, जिन में डाक्टर साहब भी थे, जिसका मुझे बड़ा दुख है, कितना अपव्यय हुआ।

डा० राम मनोहर लोहिया: क्या दिल से दुख है, या सिर्फ जीभ से ?

डा० राम सुभग सिंह: दिल से दुख है।

अध्यक्ष महोदय: डाक्टर साहब के होने का दुख है, या उनके तकलीफ़ उठाने का दुख है ?

डा० राम सुभग सिंह: जो आप कहते है, उसी से दुख है।

श्री यशपाल सिंह (कैराना): डाक्टर साहब निरीह नहीं हैं।

डा० राम सुभग सिंह: रेलों को, खास तौर पर उपनगरीय रेलों को, अपरिमित नुकसान हो रहा है, जैसा कि कलकत्ता में हुआ, जहां 40 कोचिज जला दी गई। यहां पर भी जो स्थिति हो रही है, माननीय सदस्यों को उसके बारे में विचार करना चाहिए। यहां पर अलग अलग लोगों के लिए अलग अलग गाड़ियां चलाई गई, लेकिन उसके माने ये नही हैं कि हम बराबर रुकावट डालने की कोशिश करें। जितनी गाड़ियां बढ़ाई गई हैं—खुद आसाम मेल एक बिल्कुल नई एक्सप्रेस गाड़ी है—, उन से गाजियाबाद के लोगों को भी फायदा होता है। जहां तक रेलों को सुधारने के काम का सम्बन्ध है, उस के लिए हम पूरा प्रयास करेंगे, लेकिन एक वाजिब नागरिक की हैसियत से रेलों के साथ जो व्यवहार करना चाहिए, वह उन लोगों को करना पड़ेगा।

श्री मधु लिमये: मुसाफ़िरों को कितना मुआवजा दिया गया है ?

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, रेल मंत्री साहब से सवाल यह पूछा जाता है कि जो कुछ इस समय उपनगरीय रेलगाड़ियों के सिलसिले में या समय-सूचिका के सिलसिले में उन से बद-इन्तजामी हो रही है, उसको वह कब दूर करेंगे और वह जवाब देते हैं कि जनता की तरफ से बद-इन्तजामी हो रही है । इस तरह बातचीत नहीं हो सकती है । बातचीत तभी हो सकेगी, जब वह सवाल का सही जवाब देंगे ।

डा० राम सुभग सिंह : जहां तक उपनगरीय गाड़ियों को चलाने का सवाल है, यहां एक पुल है और हम उन्हीं की दृष्टि से एक और पुल बनाने वाले हैं । जहां तक शटल ट्रेनों और उपनगरीय गाड़ियों का सम्बन्ध है, हम लोग विचार करेंगे कि नया पुल बनते ही उन्हें और बढ़ाया जाये ।

डा० राम मनोहर लोहिया: और समय-सूची की बद-इन्तजामी ?

डा० राम सुभग सिंह : उसके बारे में मैंने पहले ही कह दिया है कि हम लोगों से राय करके उस में सुधार करेंगे ।

श्री किशन पटनायक : (सम्बलपुर) : गाड़ी लेट होने के कारण यात्रियों को जो नुक्सान पहुंचता है, क्या उसके लिये अभी तक किसी ने मुआवजे की मांग की है और यदि लोग करने लगें तो आपका क्या रुख होगा ?

डा० राम सुभग सिंह : मैं चाहूंगा कि जहां जहां जिनकी बदौलत ऐसी बाधायें उपस्थित होती हैं, उन से मुआवजा मांगें तो लेकर दे दिया जाय ।

Shri P. C. Borooah (Sibsagar): May I know whether this incident occurred on account of the action of miscreants or genuine passengers when Dr. Lohia was travelling? If it is the action of miscreants, has anybody been arrested?

Dr. Ram Subhag Singh: The police tried to reach there in time. We await their report.

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : मैं यह जानना चाहता हूं कि इस समय लड़कों की परीक्षायें चल रही थीं और इस असुविधा के कारण वे समय पर परीक्षा में नहीं पहुंचे, इसी कारण से रेलगाड़ी भी रोकी गई तथा सरकार ने बताया कि इससे रेल्वे को हानि हो रही है, मैं जानना चाहता हूं कि इससे और कितनी हानि सरकार को हुई है ?

एक माननीय सदस्य : वह गाड़ी गाजियाबाद से चली थी । मैं किसी को दोष नहीं देता कि उसको रोकने वाले लड़के थे या कौन था । अगर कोई परीक्षा देने वाले विद्यार्थी थे उनको समझना चाहिए था ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : क्या जिन लोगों ने कल गाड़ी रोकी थी, उन्होंने चेतावनी दी है जो आज के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि आगे आने वाली 2 जून को इसी प्रकार गाड़ी रोकी जायगी, यदि सरकार ने हमें समय पर पहुंचाने की व्यवस्था न की तो ऐसी स्थिति में—, 2 जून को इस प्रकार का वातावरण न बने उससे पहले ही सरकार को इस प्रकार की व्यवस्था कर लेनी चाहिए ताकि ऐसी स्थिति पैदा न हो ।

डा० राम सुभग सिंह : किसी धमकी से डर कर हम लोग कोई काम करने वाले नहीं हैं ।

श्री राम हरख यादव : अखबारों के देखने से मालूम होता है कि यह वारदातें ज्यादातर स्कूल और कालिज के तालिब-इल्मों से हुई हैं, खतरे की जंजीर को खींचने से । इस किस्म के वाकयात दो साल के अन्दर अक्सर दिल्ली और गाजियाबाद के बीच में हुए हैं मैं जानना चाहता हूं कि क्या

सरकार इस बात का तजुर्बा करना चाहती है कि खतरे की जंजीर को दिल्ली और गाजियाबाद के दरमियान हटा दिया जाये, जैसा कि कासगंज और फर्रुखाबाद में हुआ था, क्या आप इस तरह का करने को तैयार हैं ?

डा० राम सुभग सिंह : असल में बात सही है कि खतरे की जंजीर खींची गई है इस सेक्शन पर और उस जंजीर के बारे में जो मंत्री महोदय ने आदेश दिये हैं, उसके अनुसार हम लोग कार्य करेंगे ।

12.32 hrs.

RE: QUESTIONS OF PRIVILEGE

Mr. Speaker: Shri Kamath.

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : मैंने आपको विशेषाधिकार का नोटिस दिया था ।

अध्यक्ष महोदय : आप सब्र करें, बैठिये ।

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): Mr. Speaker, may I crave your permission....

Mr. Speaker: Very brief.

Shri Hari Vishnu Kamath: Not more than three minutes.

May I crave your permission and the indulgence of the House to raise under rule 225 of the Rules of Procedure, a question involving a breach of privilege? The House is well aware that yesterday the Minister of Planning and Social Welfare clarified certain points which had been raised in the House the day before, and in the course of his statement which had been laid on the Table and which is with all hon. Members, he said:

> "I should like to deny that the statement that I propose to make tomorrow has been agreed to"—

mark the words 'agreed'—

> "with the President of the World Bank, Mr. Woods or that I am waiting to get clearance to the statement from Washington."

Later on, in the same paragraph, he became more categorical—will you kindly come to the tail end of the paragraph?

> "There could be no question of my having obtained the agreement of the World Bank President to it or sought the clearance of Washington to it."

This is very well put, because while we are in favour of aid on honourable terms from all countries, including Russia, America and smaller countries, India, as a self-respecting nation, will not ask for any clearance from any country, be it Russia or any other country, for a statement that is to be made by a Minister in the House, and no permission or agreement of any foreign dignitary is necessary for making a statement here.

But the first paragraph, unfortunately, is not contradicted, the statement that the PTI correspondent in Washington or New York—I do not know where he is stationed—made.

Shri Hem Barua (Gauhati): New York.

Shri Hari Vishnu Kamath: New York. I am thankful to my colleague, Shri Hem Barua; he knows it better.

According to the statement made by the Minister,

> "Some hon. Members had also given notice of a privilege motion"—

that was against the Minister which you rightly ruled out yesterday—

> "in regard to a PTI report that before leaving Washington, I met